2 तुलसीदास

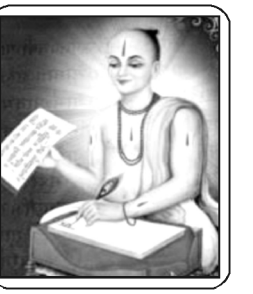

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–संवत् 1554 वि0 (सन् 1532 ई.)
- **जन्म-स्थान**–राजापुर गाँव (चित्रकूट), उ0प्र0।
- **बचपन का नाम**–रामबोला।
- **माता-पिता**-हुलसी एवं आत्माराम दुबे।
- **मृत्यु**–संवत् 1680 वि0 (1623 ई0)।
- **गुरु-शिक्षक**–नरहरिदास।
- **लेखन विधा**–काव्य।
- **शिक्षा**–सन्त बाबा नरहरिदास ने भक्ति के साथ-साथ वेद-वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण आदि की शिक्षा दी।
- **भाषा**–अवधी तथा ब्रज।
- **शैली**–छप्पय, दोहा, चौपाई, गीत, कवित्त-सवैया।
- **प्रमुख रचनाएँ**–रामचरितमानस, जानकी मंगल, दोहावली, गीतावली, पार्वती-मंगल, रामलला-नहछू, रामाज्ञा प्रश्न आदि।
- **साहित्य में स्थान**–श्रेष्ठ भक्त, ज्ञानी, विचारक, लोकनायक, दार्शनिक व मानव जीवन के सफल पारखी के रूप में सर्वश्रेष्ठ कवि।

गोस्वामी तुलसीदास के जन्म के सम्बन्ध में विद्वानों में बहुत मतभेद है। गोस्वामी तुलसीदास के जन्म-स्थान के सन्दर्भ में तीन मत प्रचलित हैं– 'मूल गोसाईं चरित' और 'तुलसी चरित' में इनका जन्म-स्थान राजापुर बताया गया है। शिवसिंह सेंगर और राम गुलाम द्विवेदी भी राजापुर को गोस्वामी जी का जन्म-स्थान मानते हैं। लाला सीताराम, गौरीशंकर द्विवेदी, रामनरेश त्रिपाठी तथा डॉ0 रामदत्त भारद्वाज सोरों को तुलसीदास जी का जन्म-स्थान मानते हैं। ''मैं पुनि निज गुरु सन सुनी, कथा सो सूकरखेत'' –गोस्वामी जी की इस उक्ति को ये विद्वान प्रामाणिक मानते हुए सूकर खेत का अभिप्राय सोरों मानते हैं। आचार्य शुक्ल का अभिमत है कि 'सूकर खेत' को भ्रम से सोरों समझ लिया गया। लेकिन प्रचलित रूप में तुलसीदास का जन्म संवत् 1554 वि0 की श्रावण शुक्लपक्ष सप्तमी को चित्रकूट जिले के अन्तर्गत राजापुर ग्राम में माना जाता है। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनके जन्म के सम्बन्ध में निम्न दोहा प्रसिद्ध है—

''पन्द्रह सौ चौवन बिसे, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्‌यो शरीर॥''

इनका जब जन्म हुआ तब ये पाँच वर्ष के बालक मालूम होते थे। दाँत भी सब मौजूद थे। जन्मते ही इनके मुख से 'राम' का शब्द निकला और लोग इन्हें 'रामबोला' कहने लगे। आश्चर्यचकित होकर इन्हें राक्षस समझकर माता-पिता द्वारा त्याग दिये जाने के कारण इनका पालन-पोषण एक दासी ने तथा ज्ञान एवं भक्ति की शिक्षा प्रसिद्ध सन्त बाबा नरहरिदास ने प्रदान की। इनका विवाह रत्नावली के साथ हुआ था। ऐसा प्रसिद्ध है कि रत्नावली की फटकार से ही इनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ। कहा जाता है कि एक बार पत्नी द्वारा बिना बताये ही मायके चले जाने पर प्रेमातुर तुलसी अर्द्धरात्रि में आँधी-तूफान का सामना करते हुए अपनी ससुराल जा पहुँचे। पत्नी ने इसके लिए उन्हें बहुत फटकारा। फटकार से इन्हें वैराग्य हो गया। इसके बाद काशी के विद्वान् शेष सनातन से तुलसी ने वेद-वेदांग का ज्ञान प्राप्त किया और अनेक तीर्थों का भ्रमण करते हुए राम के पवित्र चरित्र का गान करने लगे। इनका समय काशी, अयोध्या और चित्रकूट में अधिक व्यतीत हुआ। संवत् 1680 श्रावण कृष्णपक्ष तृतीया शनिवार

को असीघाट पर तुलसीदास राम-राम कहते हुए परमात्मा में विलीन हो गये। इनकी मृत्यु के सम्बन्ध में निम्न दोहा प्रसिद्ध है—

''संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण कृष्णा तीज शनि, तुलसी तज्यो शरीर॥''

ये राम के भक्त थे। इनकी भक्ति दास्य-भाव की थी। संवत् 1631 में इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ **'रामचरितमानस'** की रचना आरम्भ की। इनके इस ग्रन्थ में विस्तार के साथ राम के चरित्र का वर्णन है। तुलसी के राम में शक्ति, शील और सौन्दर्य तीनों गुणों का अपूर्व सामञ्जस्य है। मानव-जीवन के सभी उच्चादर्शों का समावेश करके इन्होंने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बना दिया। रामचरितमानस बड़ा ही लोकप्रिय ग्रन्थ है। विश्व-साहित्य के प्रमुख ग्रन्थों में इसकी गणना की जाती है। 'रामचरितमानस' के अतिरिक्त इन्होंने **'जानकी-मंगल', 'पार्वती-मंगल', 'रामलला-नहछू', 'रामाज्ञा प्रश्न', 'बरवै रामायण', 'दोहावली', 'कवितावली', 'गीतावली'** तथा **'विनय-पत्रिका'** आदि ग्रन्थों की रचना की। इनकी रचनाओं में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पूर्ण चित्रण देखने को मिलता है।

अपने समय तक प्रचलित दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, पद आदि काव्य-शैलियों में तुलसी ने पूर्ण सफलता के साथ काव्य-रचना की है। इनके काव्य में भाव-पक्ष के साथ कला-पक्ष की भी पूर्णता है। उसमें सभी रसों का आनन्द प्राप्त होता है। स्वाभाविक रूप में सभी प्रकार के अलंकारों का प्रयोग करके तुलसी ने अपनी रचनाओं को प्रभावोत्पादक बना दिया है। इनका ब्रजभाषा तथा अवधी भाषा पर समान अधिकार था। कवितावली, गीतावली, विनय-पत्रिका आदि रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं और रामचरितमानस अवधी में। अवधी को साहित्यिक रूप प्रदान करने के लिए इन्होंने संस्कृत शब्द का भी प्रयोग किया है, पर इससे कहीं भी दुरूहता नहीं आने पायी है।

तुलसीदास जी ने अपनी भक्ति भावना की अविरल धारा से हिन्दी पाठकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनके काव्य के समान जनता के हृदय पर किसी अन्य कवि का प्रभाव नहीं है। हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ और अमर कवि तुलसीदास जी श्रेष्ठ भक्त, ज्ञानी, विचारक, लोकनायक, दार्शनिक और मानव-मन के कुशल पारखी हैं। तुलसीदास जी हिन्दी काव्य-जगत की अमूल्य धरोहर हैं, उन्होंने 'रामचरितमानस' महाकाव्य में श्रीराम के मर्यादा-पुरुषोत्तम चरित्र के अंकन के साथ-साथ श्रीराम को शिवजी का तथा शिवजी को श्रीराम का भक्त प्रदर्शित करके अद्वितीय समन्वय की भावना स्थापित की। हिन्दी साहित्य में इनका योगदान अतुलनीय है।

धनुष-भंग

दो0– उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग॥1॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी।।
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने।।
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरसहिं सुमन जनावहिं सेवा।।
गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा।।
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी।।
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी।।
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे।।
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहु रामु गनेस गोसाईं।।

दो0– रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ॥2॥

सखि सब कौतुकु देखनि हारे। जेउ कहावत हितू हमारे।।
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं।।
रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा।।
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं।।
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी।।
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी।।
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषेउ सुजसु सकल संसारा।।
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु त्रिभुवन तम भागा।।

दो0– मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब॥3॥

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे।।
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी।।
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती।।
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही।।
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी।।
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई।।
गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा।।
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी।।

दो0– देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर॥4॥

नीके निरखि नयन भरि सोभा। पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा।।
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभु न हानी।।
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई।।
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा।।
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा।।
सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभुचाप गति तोरी।।
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी।।
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष जुग सय सम जाहीं।।

दो0– प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल॥5॥

गिरा अनिलि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी।।
लोचन जल रह लोचन कोना। जैसें परम कृपन कर सोना।।
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी।।
तन मन बचन मोर पनु साचा। रघुपति पद सरोज चितु राचा।।
तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहि मोहि रघुबर कै दासी।।
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।।
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना।।
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें। चितव गरुड़ लघु ब्यालहि जैसें।।

दो0– लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मंडु॥6॥

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला।।
राम चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा।।
चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए।
सब कर संसउ अरु अग्यानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू।।
भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई।।
सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा।।
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई।।
राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहिं कोऊ कड़हारू।।

दो0– राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि॥7॥

देखी बिपुल बिकल बैदेही। निमिष बिहात कलप सम तेही।।
तृषित बारि बिन जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तड़ागा।।
का बरषा सब कृषी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें।।
अस जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी।।
गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा।।
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ। पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ।।
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें।।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।।

छन्द– भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरूम कलमले।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं।।

('रामचरितमानस : बालकाण्ड' से)

वन-पथ पर

पुर तें निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दये मग में डग द्वै।
झलकी भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गये मधुराधर वै।।
फिर बूझति हैं- 'चलनो अब केतिक, पर्णकुटी करिहौं कित ह्वै?'
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।।1।।

"जल को गये लक्खन हैं लरिका, परिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि डाढ़े।।"
तुलसी रघुवीर प्रिया स्रम जानि कै बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकी नाह को नेह लख्यौ, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े।।2।।

रानी मैं जानी अजानी महा, पबि पाहन हूँ ते कठोर हियो है।
राजहु काज अकाज न जान्यो, कह्यो तिय को जिन कान कियो है।।
ऐसी मनोहर मूरति ये, बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है?
आँखिन में, सखि! राखिबे जोग, इन्हें किमि कै बनबास दियो है?।।3।।

सीस जटा, उर बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी सी भौंहें।
तून सरासन बान धरे, तुलसी बन-मारग में सुठि सोहैं।
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं।
पूछति ग्राम बधू सिय सों 'कहौ साँवरे से, सखि रावरे को है?'।।4।।

सुनि सुन्दर बैन सुधारस-साने, सयानी हैं जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन दै सैन तिन्है समुझाइ कछू मुसकाइ चली।।
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन-लाहु अली।
अनुराग-तड़ाग में भानु उदै बिगसीं मनो मंजुल कंज-कली।।5।।

('कवितावली : अयोध्याकाण्ड' से)

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) गुरुपद बंदि सहित ..... रामु गनेस गोसाईं। **(2019AE)**
अथवा नृपन्ह केरि आसा ..... गनेस गोसाईं।
(ख) सखि सब ..... मंदर लेहीं।
(ग) बोली चतुर सखी .....अंकुस खर्ब।
(घ) तन मन बचन ..... ब्यालहिं जैसें।
अथवा गिरा अनिलि मुख ..... न कछु संदेहू।
(ङ) गुरहि प्रनामु ..... घोर कठोरा।
(च) पुर ते निकसी .....चलीं जल च्वै। **(2016CB,CE,20ME)**
(छ) सीस जटा ..... रावरे को है? **(2018HF)**
(ज) सुनि सुन्दर ..... कंज-कली। **(2017AG,19AC)**
(झ) रानी मैं जानी .....बनवास दियो है? **(2019AA,AG)**
(ञ) मंत्र परम लघु .....बढ़ी अति प्रीती। **(2016CD)**
(ट) जल को गए ..... बिलोचन बाढ़े। **(2016CB)**
(ठ) उदित उदयगिरि मंच पर ..... बर कुँजर गामी। **(2017AB)**
(ड) दिसिकुंजरहु कमठ ..... कोऊ कड़हारन। **(2020MB)**

2. तुलसीदास का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CA,CB,CF,CG,17AA 18HA,19AB,20MC,MA,MF)**

अथवा तुलसीदास का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए।

3. गोस्वामी तुलसीदास के साहित्यिक अवदान एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. तुलसीदास का जीवन-वृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

5. तुलसीदास का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए तथा उनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

6. तुलसीदास का जीवन-वृत्त लिखकर उनकी काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

➨ धनुष-भंग

7. राम को देखकर नगरवासी नर-नारियों को कैसा अनुभव हुआ?

8. धनुष-भंग के प्रसंग में सीता की सखियों से हुए वार्त्तालाप का वर्णन कीजिए।

9. सखी का वचन सुनकर सीता जी मन-ही-मन क्या-क्या सोचने लगी थीं?

10. जब राम धनुष के निकट पहुँचते हैं तो जनक क्यों चिन्तित हो जाते हैं?

➨ कवितावली

11. किस बात से पता लगता है कि वन-मार्ग में थोड़ी दूर चलने के बाद ही सीताजी थक गयी हैं?

12. वन-मार्ग में राम और लक्ष्मण के मध्य सीता को देख गाँव की स्त्रियों में जो वार्त्तालाप हुआ, उसका वर्णन पाठ के आधार पर कीजिए।

13. सीता ने ग्रामीण स्त्री के प्रश्न के उत्तर में जिस तरह अपने पति और देवर का परिचय दिया, उससे उनके स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है?

14. 'वन-पथ पर' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।

अथवा 'वन-पथ पर'–तुलसीदास जी द्वारा रचित 'कवितावली' के इस अंश का सार संक्षेप में लिखिए।

15. 'धनुष-भंग' और 'कवितावली' में प्रयुक्त छन्दों के नाम बताइए।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) 'धनुष-भंग' पढ़ने के बाद आप पर उसका क्या प्रभाव हुआ? स्पष्ट कीजिए।

(ii) तुलसीदास की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

टिप्पणी

➨ धनुष-भंग

उदित = प्रकट। **बिकसे** = प्रसन्नता से खिल उठे। **लोचन** = नेत्र। **भृंग** = भौंरे। **नखत** = नक्षत्र। **उलूक** = उल्लू। **लुकाने** = छिप गये। **बिसोक** = शोकरहित। **बंदि** = वन्दना। **अनुरागा** = प्रेमपूर्वक। **आयसु** = आज्ञा। **सहजहिं** = स्वाभाविक रूप से। **कुंजर** = हाथी। **पुलक** = प्रसन्नता, विभोर होकर। **सुकृत** = पुण्य। **सिवधनु** = भगवान् शंकर का धनुष। **भूप** = राजा। **मराल** = मयूर। **मृदु** = मधुर। **तेजवंत** = तेजस्वी। **सोषेउ** = सुखा देना। **रबि मंडल** = सूर्य की आभा। **त्रिभुवन** = तीनों लोकों का। **तम** = अँधेरा। **कुसुम** = फूल। **विषादु** = दुःख। **बिलोकि** = देखकर। **बैदेही** = सीता जी। **बिनवति** = प्रार्थना करती हैं। **अकुलानी** = व्याकुल होकर। **निरखि** = देखकर। **सुमिरि** = स्मरण करके। **मृदुगात** = कोमल शरीरवाले। **भोरी** = भ्रमित। **निहारी** = देखकर। **परिताप** = कष्ट। **लोचन** = नेत्र। **सरोज** = कमल। **कृपानिधान** = करुणा के सागर। **तकेउ** = देखा। **महीपन्ह** = राजाओं के। **दारुन** = कठोर। **दामिनि** = विद्युत। **तजि** = छोड़कर। **मारगु** = पथ। **बाल पतंग** = बालसूर्य। **संत** = सज्जन। **सरोज** = कमल। **निसि** = निशा, रात्रि। **नासी** = नष्ट हो गयी। **अवली** = पंक्ति। **महिप** = राजा। **लुकाने** = छिप गये। **कोक** = चकवे। **जनावहि** = प्रकट कर रहे। **पुर** = नगर। **चापा** = धनुष। **दापा** = दर्प, घमंड। **बाल मराल** = हंस का बच्चा। **मंदर** = मंदराचल। **सनायप** = समझदार। **सिरानी** = ज्ञानी। **विधि गति** = भाग्य की गति। **गनिअ** = गिनना। **कुंभज** = घड़े से उत्पन्न होने वाले। **तम भागा** = अंधकार भाग जाता है। **विधि हरिहर सुर** = ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देवता। **खर्ब** = छोटा। **सायक** = बाण। **संसउ** = संशय, संदेह। **भंजब** = तोड़ेंगे। **सभय** = भय के साथ, डरा हुआ। **मनाव** = मना रही। **भवानी** = पार्वती। **गरुआई** = भारीपन। **गननायक** = गणों के नायक (गणेशजी)। **थोरी** = थोड़ी। **पुलकावलि** = रोमांच होना। **नीकें** = अच्छी तरह। **पनु** = प्राण। **मनु छोभा** = मन क्षुब्ध हुआ। **अहह** = अहो। **सिख** = सीख। **बुध** = ज्ञानी, पंडित। **कुलिसहु** = वज्र के समान। **परिताप** = बड़ा संताप। **लव** = क्षण। **चितई** = देखकर। **मनसिज** = कामदेव। **गिरा अलिनि** = वाणी रूपी भ्रमरी। **कृपन** = कृपण, कंजूस। **तकेउ** = ताका, कठोर दृष्टि से देखा। **गरुड़** = गरुड़। **व्यालहि** = साँप को। **हरि कोदंडु** = शिव का धनुष। **चापि** = दबाकर। **दिसिकुंजरहु** = दिशारूपी हाथी। **कमठ** = कच्छप। **अहि** = शेषनाग। **कोला** = वराह। **भृगुपति** = परशुराम। **मुनिबरन्ह** = श्रेष्ठ मुनियों की। **कदराई** = कायरता। **दावा** = दावानल। **अपारू** = अपार। **चाहत पारु** = पार जाना चाहते हैं। **कड़हारू** = कवट। **चित्र लिखे** = चित्र में लिखे हुए, जड़। **निमिष** = क्षण, पलक झपकने में लगा समय। **बिहात** = बीत रहा था। **कलप** = कल्प। **तृषित** = प्यासा। **मुएँ करइ** = मर जाने पर। **लाघव** = कौशलपूर्वक। **लखा** = देखा। **धुनि** = ध्वनि। **रव** = शब्द। **रबि बाजि** = सूर्य के घोड़े। **कलमले** = कलमला (व्याकुल हो) उठे। **कर कान्ह दीन्हें** = कानों पर हाथ रखकर। **कोदंड** = धनुष। **पुरतें** = शृंगवेरपुर से। **निकसी** = निकली। **रघुबीर-बधू** = श्रीराम की पत्नी-सीता जी। **पुट** = सम्पुट। **केतिक** = कितना। **परिखौं**= प्रतीक्षा करो। **घरीक** = एक घड़ी के लिए। **पसेउ** = पसीना। **बयारि** = हवा। **भूभुरि** = धूल, बालू। **डाढ़े** = तपे हुए। **स्रम जानि कै** = थकी हुई समझदार। **बिलंब लौं** = देर तक। **कंटक** = काँटे। **काढ़े** = निकाले। **नाह** = स्वामी। **विलोचन** = नेत्र। **अजानी** = अज्ञानी। **पवि** = वज्र। **काज-अकाज** = उचित और अनुचित। **कान कियो है** = कहना मान लिया है। **जोग** = योग्य। **किमि** = क्यों। **सीस** = शीर्ष, सिर। **उर** = वक्षस्थल। **तून** = तरकस। **सरासन** = धनुष। **सुठि** = अच्छी तरह। **रावरे** = तुम्हारे। **बैन** = वचन। **साने** = सिक्त। **सयानी** = चतुर। **सैन** = संकेत। **औसर** = अवसर। **लाहु** = लाभ। **अली** = सखी। **तड़ाग** = तालाब। **अनुराग-तड़ाग में** = प्रेम के सरोवर में। **बिगसी** = विकसित।

➨ वन-पथ-पर

1. **पुरतें** = शृंगवेरपुर में। **पुट सूखि गये मधुराधर वै** = दोनों मधुर होंठ सूख गये। **धरि धीर** = धैर्य धारण कर। **केतिक** = कितनी। **पर्णकुटी** = पत्तों की कुटिया। **आतुरता** = बेचैनी, व्याकुलता।

2. **परिखौ** = प्रतीक्षा करो। **घरीक** = एक घड़ी। **भूभुरि डाढ़े** = गरम धूल से जले हुए। **स्रम जानि कै** = थकी समझ कर। **कण्टक** = काँटा (टे)। **काढ़े** = निकाले।

3. **अजानी** = अज्ञानी। **पबि** = वज्र। **तिय** = पत्नी।

4. **तून** = तरकस।

5. **अनुराग-तड़ाग** = प्रेम का सरोवर।

●●